पूर्वांचल के संगठित एवं असंगठित श्रमिकों की सामाजिक दशा

डॉ० संध्या पाण्डेय*

भारत अभी भी मुख्यतः कृषि प्रधान देश है, जहाँ की 80 प्रतिशत आबादी जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर निर्भर करती है। यह तथ्य उत्तर प्रदेश तथा बिहार के लिए और भी ज्यादा उपयुक्त है, जहाँ औद्योगीकरण का विकास देश के अन्य भागों की तुलना में बहुत कम हुआ है। औद्योगिक विकास में पूँजीपति तथा प्रबन्ध वर्ग के अतिरिक्त एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष श्रम होता है । सभी देशों में विशेषतः विकासशील देशों में जहाँ औद्योगीकरण की गति अत्यन्त धीमी है तथा जहाँ औद्योगिक विकास अभी बाल्यावस्था से गुजर रहा है। स्वस्थ औद्योगिक विकास की दिशा में श्रमिकों के योग्यताओं की अवहेलना नहीं की जा सकती है। हमारे देश में श्रमिकों का वैज्ञानिक अध्ययन अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान रखता है, सबसे पहली बात तो यह है कि इस देश में औद्योगीकरण की शुरूआत अंग्रेजों के द्वारा की गयी थी जो मुख्यतः व्यवसायी थे तथा व्यवसाय तक ही सीमित नहीं रहकर औद्योगिक विकास के द्वारा भी इस देश का शोषण करना चाहते थे। अंग्रेजों के अनुयायी बड़े–बड़े पूजीपतियों का दृष्टिकोण भी उनसे पृथक नहीं था। इसलिए तथा इस कार्य से कि हमारे यहाँ एक बहुत बड़ा श्रम बाजार उपलब्ध था। उद्योगपतियों ने देश के विभिन्न भागों में उद्योग स्थापित करना प्रारम्भ किया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की 1860 की स्थापना के बाद देश के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर कुछ कारखाने स्थापित किये गये। क्योंकि औद्योगिक प्रणाली इस देश की व्यवस्था में उत्पन्न नहीं हुई थी इसका बहुआयामी प्रभाव देश पर पड़ा। इन उद्योगों में काम करने के लिए श्रमिकों को सुदूरवर्ती क्षेत्रों से लाया गया। बहुतों को अच्छी मजदूरी का लालच देकर तथा अनेकों को अवैध तरीकों के द्वारा। भारत एक विकासशील देश है, जिसकी सामाजिक संरचना, मुख्यतः परम्परागत है। इस दृष्टि से यह शोध का बड़ा रोचक विषय बन जाता है कि आधुनिक उद्योगों के संगठन तथा परम्परागत सामाजिक संरचना के बीच अर्न्तसम्बन्धों का संकुल किस प्रकार का है। किस प्रकार औद्योगीकृत समाजों में औद्योगिक विकास सांस्कृतिक मूल्यों, कृषक श्रमिकों द्वारा नयी दशाओं से सपने को अभियोजित करने की प्रक्रिया,कार्य के प्रति उनके दृष्टिकोण तथा उत्पादकता को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है। जैसा कि सर्वविदित है कि समुदाय तथा उद्योगों के सम्बन्ध निरन्तर निर्वाचित रूप से बने होते हैं दोनों के सम्बन्ध अन्योन्याश्रित होने के कारण दोनों एक – दूसरे को प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से विचार करने पर यह शोध करना बड़ा प्रासंगिक हो जाता है कि औद्योगीकरण के प्रभाव में परम्परागत सामाजिक मूल्यों में, जातीय संरचना तथा आर्थिक सम्बन्धों एवं औद्योगिक श्रमिकों के सामाजिक जीवन के अन्य घटकों में जिस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं। वस्तुतः इस प्रकार के अध्ययनों के आधार पर भारत में औद्योगीकरण तथा सामाजिक रूपान्तर के सम्बन्धों के विषय में विस्तृत समाजीकरण किया जा सकता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के सम्बन्ध में यह अध्ययन अपेक्षाकृत ज्यादा प्रासंगिक होगा क्योंकि यह क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से भारत में सबसे पिछड़ा हुआ है। कतिपय समाजशास्त्रियों ने इस दिशा में अनुसंधान किया है विशेषतः लैम्बर्ट ने पूना के श्रमिकों पर तथा प्रो0 एल0 पी0 उद्योग ने बिहार के आदिवासी औद्योगिक श्रमिकों पर औद्योगीकरण के सामाजिक, सांस्कृतिक आयामों पर प्रकाश डाला है। उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर किये गये समाजीकरण प्रस्तुत अध्ययन के लिए उपकल्पना निर्माण में महत्वपूर्ण होंगे। औद्योगीकरण आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है इसके द्वारा उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है तथा जीवन स्तर ऊँचा होता है। औद्योगीकरण तथा आर्थिक विकास के पक्षों में अनेक समानतायें हैं, तथापि अपने आप में औद्योगीकरण एक आमूल परिवर्तन की प्रक्रिया है यह मात्र उत्पादन बढ़ाने वाली प्रक्रिया नहीं बल्कि इसमें आर्थिक प्रणाली में गुणात्मक परिवर्तन निहित होता है। प्रो0 विद्यार्थी इत्यादि विद्वानों ने अपने अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया है कि औद्योगीकरण जिस प्रकार पुराने सामाजिक मूल्यों तथा ग्रामीण समाजों की परम्परागत उन्मुखता को परिवर्तित करने में सक्षम रहा है किन्तु इसके विपरीत उन्होंने यह उद्घाटित करने का प्रयास नहीं किया है कि किसी समाज की प्राचीन मान्यता में परम्परायें तथा मूल्य किस प्रकार आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। उपरोक्त संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित हैं

1. औद्योगिक संगठन तथा परम्परागत सामाजिक संरचना के अन्तर सम्बन्धों का विश्लेषण।
2. औद्योगीकृत समाज में औद्योगिक विकास को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक मूल्य।
3. नयी आर्थिक प्रणाली से कृषक श्रमिकों के अभियोजन की प्रक्रिया।
4. कार्य को प्रति श्रमिकों का दृष्टिकोण तथा उत्पादकता को प्रभावित करने वाले सामाजिक

*एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद

कारक।

5. औद्योगिक तथा कृषक श्रमिकों के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा यह पता करने का प्रयास किया जायेगा कि किस प्रकार औद्योगिक श्रमिकों के सामाजिक जीवन में मूल्यों, जाति संरचना तथा आर्थिक सम्बन्धों में परिवर्तन हो रहा है। इस परिप्रेक्ष्य मे उत्तरदाताओं की सामाजिक प्रस्थिति जातीय आधार, उनकी पारिवारिक संरचना, शिक्षा का स्तर, उत्पत्ति स्थान, स्वामी निवास की प्रकृति पर प्रकाश डाला जायेगा।
6. व्यक्ति औद्योगिक श्रमिक में परिवर्तित होता है। लैम्बर्ट ने अपने अध्ययन में पाया कि श्रमिक वर्ग में मुख्यतः ऊँची जाति के तथा सामान्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति आते हैं। प्रो0 लैम्बर्ट का कहना है कि उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के परिवार बड़े आकार के होते हैं। फैक्ट्री में कार्य करने वाले श्रमिक शहर के सामान्य लोगों से ज्यादा शिक्षित होते हैं । फैक्ट्री में कार्यरत अधिकांश श्रमिक प्रवासी होते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि फैक्ट्री में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक स्थिति गैर औद्योगिक श्रमिकों की अपेक्षा अच्छी होती है। इसका परीक्षण इस अध्ययन द्वारा स्पष्ट एवं अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. लैम्बर्ट, डी रिचार्ड वर्क्स, फैक्ट्री एण्ड सोशल चन्च इन इण्डिया, प्रीन्टर्स, युनिवर्सिटी प्रेस, 1963 देसाई, ए0 आर0 तथा पिल्लई, एस0 डी0– प्रोफाइल ऑफ एन इण्डियन
2. सीटी, युनिवर्सिटी ऑफ बाम्बे, 1972
3. सक्सेना, आर0 सी0 लेबर प्राबलम एण्ड सोशल वेलफेयर, जय प्रकाश नाथ कम्पनी, मेरठ, 1952
4. उद्योग, एल0 पी0 सोशियो कल्चर इम्पीरेशन्स ऑफ इण्डस्ट्रिलाइजेशन इन इण्डिया, ए स्टडी ऑफ ट्राइबल बिहार रिसर्च प्रोग्राम कमेटी, लाइनिंग कमीशन गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया नई दिल्ली, 1970
5. मिलर एण्ड पार्म ए0 न0 इन्ट्रोडक्शन टू इण्डस्ट्रियल सोशियोलॉजी।
6. गिरि, पी0 बी0 लेबर प्राबलम्स इन इण्डिया मुकर्जी, राधाकमल इण्डियन वर्किंग क्लास
7. मजुमदार एण्ड पार्म सोशल कन्टूर्स ऑफ एन इण्डस्ट्रियल सोशियोलॉजी।